Q. No.- 06

1 सार्वजनिक व्यय के आर्थिक एवं क्रियालक (फलनात्मक) वर्गीकरणों की व्याख्या कीजिए?

Explain the Economic and Functional classification of Public expenditure?

Ans:- सरकार के द्वारा, समाज के कल्याणा में वृद्धि करने के लिये देश के आर्थिक विकास के लिए देश के एवं अन्य कारणों के लिए किए जानेवाले व्यय को सार्वजनिक व्यय कहा जाता है। आधुनिक समय में अन्य राष्ट्रों की सहायता के लिए भी सार्वजनिक व्यय की जाती हैं।

CLASSIFICATION OF PUBLIC EXPENDITURE:⟶ (सार्वजनिक व्यय का वर्गीकरण) : सार्वजनिक व्यय का वर्गीकरण सरकार के द्वारा किये गए व्यय का वर्गीकृत ब्योरा होता है। यह वर्गीकरण इस बात को व्यक्त करता है कि सरकार के द्वारा व्यय की गई रकम का क्या प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पडेगा। सार्वजनिक व्यय का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार के राजकीय व्यय का समायोजित ब्योरा होता हैं। सार्वजनिक व्यय के वर्गीकरण से उन समस्त मंदों का विस्तृत सूची होता है जिससे लोग सार्वजनिक व्यय के औचित्य को समझ सकें। वर्गीकरण के तथ्यों के व्याख्या करने एवं असद्ध तथ्यों से सम्बन्ध स्थापित करने में सुविधा होती है दुसरे शब्दों में राजकीय व्यय का वैज्ञानिक एवं आर्थिक आधार पर क्रमवद्ध ढंग से प्रस्तुत करने की विधि को ही सार्वजनिक व्यय का वर्गीकरण कहा जाता है। इससे सार्वजनिक व्यय के प्रत्येक मंद का स्वभाव एवं प्रभाव का अध्ययन करो में सुविधा होती है। विभिन्न अर्थशास्त्रीयों ने सार्वजनिक व्यय का वर्गीकरण अलग–अलग ढंग से किया है, लेकिन उन वर्गीकरण में से आर्थिक, वर्गीकरण एवं कार्यमूलक वर्गीकरण सबसे महत्वपूर्ण हैं।

ECONOMIC CLASSIFICATION (आर्थिक वर्गीकरण)

सार्वजनिक व्यय के आर्थिक वर्गीकरण के अन्तर्गत राज्य के कार्यों के आर्थिक प्रभावों का विशलेषण किया जाता है एवं इसके आधार पर उचित आर्थिक नीतियाँ अपनाई जाती है। दुसरे शब्दों में राज्य के द्वारा किय गये सार्वजनिक कार्यों के आर्थिक प्रभावों की व्याख्या एवं विश्लेषण का आर्थिक वर्गीकरण कहा जाता है।

भारत में आर्थिक वर्गीकरण के अन्तर्गत निम्नलिखित मदे शामिल की गई है।

(A) उपयोग व्यय (Consumption experture)

(B) स्थानान्तरण भुगतान (Trasfar Pay)

(C) कुल पूँजी निर्माण (Grass Capital formation)

(D) पूँजी स्थानान्तर (Capital trasfar.)

(E) हिस्सों में विनियोग (Investment in sales)

(F) पूँजी निर्माण के लिए ऋण (Loans of Capital formation)

(G) Other Loans

(H) अन्तराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का भुगतान (Super-eruption to International of organization)

(I) Net purchase of domestic gold and rules (घरेलू सोने रखे चौदा का शुद्ध क्रम)

आर्थिक वर्गीकरण के अन्तर्गत सार्वजनिक व्यय प्रत्येक मद को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

1. REVENUE ACCOUNT (आय लेखा)

2. CAPITAL ACCOUNT (पुंजी लेखा)

अर्थव्यवस्था के संचालन में राजकीय क्रय–विक्रय के अल्पकालीन प्रभावों का विश्लेषण करने के लिय आर्थिक वर्गीकरण आवश्यक होता है। इसलिए दो भागों में बाँटा गया है→ आय की प्रगति एवं खर्च एवं पूँजी की प्राप्ति एवं खर्च

आर्थिक वर्गीकरण के अन्तर्गत भारत सरकार के बजर को दो भागों में बाँच गया है–

1. REVENGE BUDGET

2. CAPITAL BUDGET REVENUE BUDGET के अन्तर्गत आय कि प्राप्ति एवं व्यय का ब्योरा होता है। जबकि Capitat budget में पूँजी की प्राप्ति एवं व्यय का ब्योरा होता है।

REVENUE EXPENDITUR

भारत सरकार के Revenue expenditure के अन्तर्गत अ सारे चालू व्यय को शामिल किया जाता है जो सरकार के प्रशासन देश की सुरक्षा एवं सार्वजनिक व्यापारिक उपक्रम जैसे– डाक एव तार रेलवे राज्य सरकार को दिया जाने वाले अनुदान आदि आते है। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह सरकार का वह व्यय है जिससे किसी पूँजी परिसम्पत्ति का निमार्ण नहीं होता है।

CAPITAL EXPENDITURE

पूँजी के व्यय के अन्तर्गत पूंजी की अन्य सभी क्रियाओं को शामिल किया जाता है जिससे सुरक्षा एवं सार्वजनिक भुगतान के अन्तर्गत परिसम्पतियों का क्रम जैसे भूमि, भवन, म ीनों का क्रय कम्पनी के हिस्सों का क्रय आदि आते हैं।

सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा सम्पादित विभिन्न कार्यों के अनुसार सार्वजनिक व्यय का जो वर्गीकरणा किया जाता है उसे सार्वजनिक व्यय का जो कार्य मूलक कहा जाता है, जिसके अन्तर्गत आय एवं पूँजीगत व्यय का अधिक विस्तार पूर्वक विश्लेषण किया जाता है अर्थात् आर्थिक वर्गीकरण के सविस्तार विश्लेषण को कार्यमूलक वर्गीकरण कहा जाता हैं। इससे आय एवं पूँजीगत क्यायों के विभिन्न मदों की व्याख्या की जाती हैं।

कार्यमूलक वर्गीकरण के अन्तर्गत भारत वर्ष के सार्वजनिक व्यय में निम्नलिखित मदे शामिल की जाती है।

(A) General Servicers (सामान्य सेवाएँ)

(1) सुरक्षा को छोड़कर अन्य सेवाएँ

(2) सुरक्षा सेवाएं (Detenel Service)

(B) Social and economic services- (सामाजिक सेवाएं एवं आर्थिक सेवाएँ)

(1) शिक्षा।

(2) स्वस्थ सेवाएँ।

(3) अन्य सामाजिक सेवाएँ।

(4) कृषि ।

(5) उद्योग।

(6.) यातायात एवं सवाद वाहन।

(7.) अन्य आर्थिक सेवाएँ।

(8.) प्रखण्ड अनुदान एवं कर्ज।

इन उद्देश्यों के आधार पर सरकार की आर्थिक क्रियाएँ भी वर्गीकृत हो जाती है। कार्यमूलक वर्गीकरण के अन्तर्गत उन उदेश्यों का विश्लेषण एवं वर्गीकरण किया जाता है जिसे देश के लोग यह जानना चाहते है कि सरकार का व्यय जनकल्याण के लिए हो रहा है अथवा नहीं। दूसरे और कार्यमूलक वर्गीकरण के अन्तर्गत उन उदेश्यों की व्याख्या की जाती है जिसके किय सार्वजनिक व्यय किया जाता हैं।

उपयुक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि कार्यमूलक वर्गीकरण यह दर्शाने का प्रयास करता है कि. सरकारी व्यय का कौन सा भागों की किस तरह के सेवाओं पर व्यय किया जा रहा है। जैसे–कुल व्यय का कौन सा भाग शिक्षा पर व्यय किया जा रहा है और कौन सा भाग स्वरूप सेवाओं पर व्यय किया जा रहा है आदि। इस प्रकार कार्यमूलक वर्गीकरण अधिक होती हैं।

वर्तमान समय में अधिकांश विकसीत एवं विकासशील देश मिश्रित पद्धति को लागू कर रहे हैं, मिश्रित पद्धति के अन्तर्गत आर्थिक एवं कार्यमूलक वर्गीकरण दोनों को साथ–साथ शामिल किया जाता है। भारत वर्श में भी 1957 से यह पद्धति अपनाई जा रही है।